Read India
An imprint of Pratham Books

जंगल का स्कूल

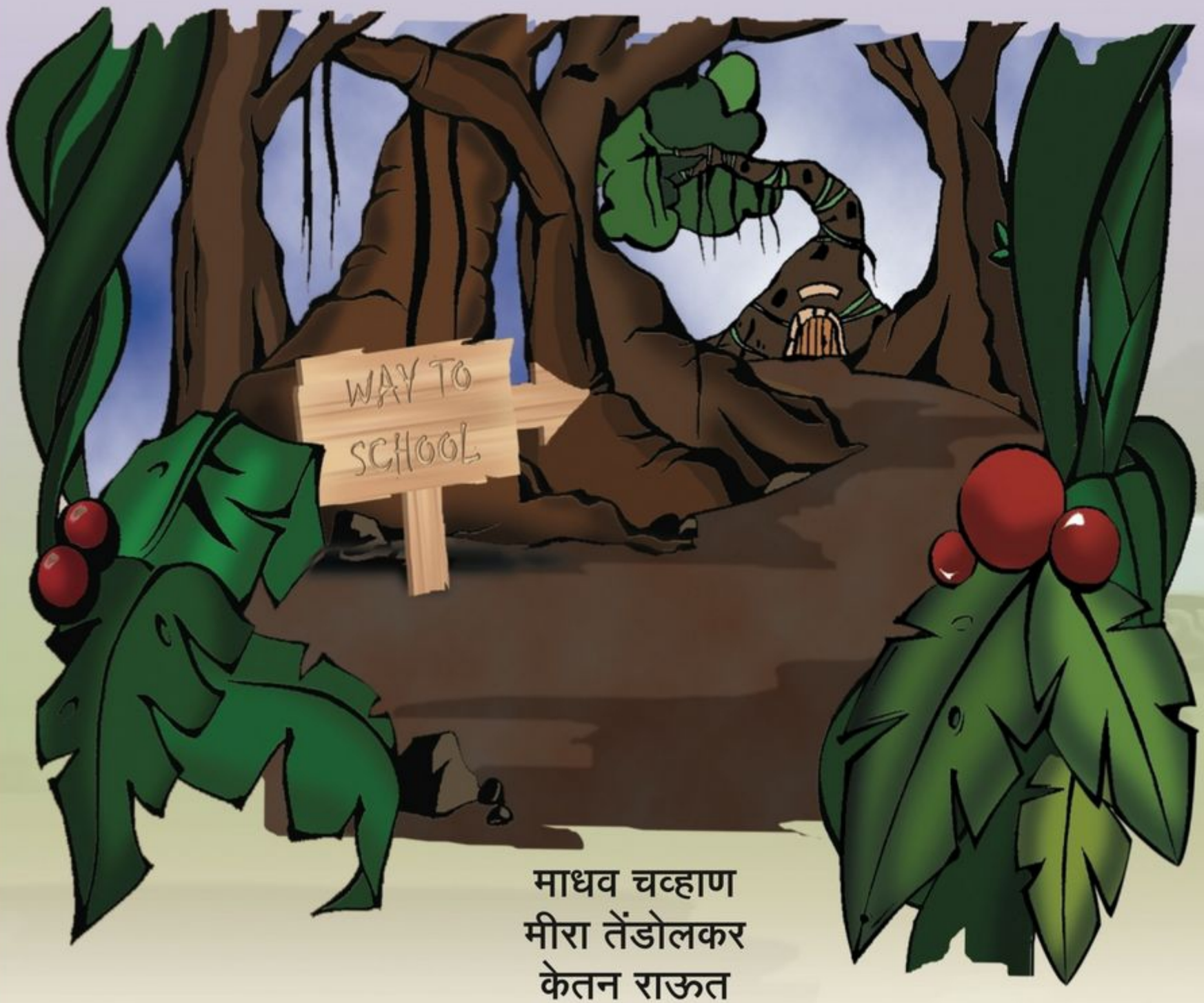

माधव चव्हाण
मीरा तेंडोलकर
केतन राऊत

Original Story (English) The Jungle School
by Madhav Chavan and Meera Tendolkar
© Pratham Books 2004
Fourth Hindi Edition: 2009

Illustrations: Ketan Raut
Hindi Translation: Pratham Books Team

ISBN: 81-8263-053-3

Registered Office:
PRATHAM BOOKS
633-634, 4th 'C' Main, 6th 'B' Cross,
OMBR Layout, Banaswadi, Bangalore 560 043
✆ 080-25429726 / 27 / 28

Regional Offices:
Mumbai ✆ 022-65162526, New Delhi ✆ 011-65684113

Typesetting and Layout by: Trimiti Services

Printed by Shubhodaya Printers

Published by PRATHAM BOOKS
www.prathambooks.org

The development of this book was sponsored by
Dubai Creek Round Table, Dubai, U.A.E.

Some rights reserved. This book is CC-BY-3.0 licensed.
Full terms of use and attribution available at:
http://www.prathambooks.org/cc

जंगल का स्कूल

लेखक

माधव चव्हाण

संकल्पना

मीरा तेंडोलकर

चित्रांकन

केतन राऊत

हिंदी अनुवाद

प्रथम पुस्तक समूह

एक घना जंगल था।

जंगल अँधेरा और घना था।
चारों तरफ़ बहुत सारे बड़े पेड़ थे।
उनके बीच पगडंडियाँ थीं।
बहुत सारे जानवर और चिड़ियाँ जंगल में रहते थे।

एक दिन सारे जानवर एक साथ इकट्ठा हुए।
"क्या तुमने सुना है ?" तोतू तोते ने पूछा।
हिरनी ने कहा, "हाँ।"
"क्या ? क्या ? क्या ?" डरपोक ख़रगोश ने पूछा।
मिंकू बंदर बोला, "हमारे जंगल में एक स्कूल है।"
मोटा हाथी सोचता रह गया, "हमममम...."
लम्बू जिराफ़ खुश हो गया।
धीमे घोंघे ने ज़ोर से कहा, "चलो जल्दी,
हम सब वहाँ चलते हैं।"

तोता सबसे आगे उड़ा।
मिंकू एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदते हुए गया।
पुराखा अजगर तेज़ी से रेंगने लगा।
“देखो,” तोतू चिल्लाया।
“क्या तुम इसे पढ़ सकते हो?”
उल्टा झूलते हुए मिंकू ने कहा,
“लगता है सब कुछ उल्टा लिखा है।”
पुराखा ने लम्बी साँस ली, “हिस.. स.. स
यहाँ किसी को पढ़ना नहीं आता।”

वाघोबाची
शाळा

जल्दी ही सब दोस्त वहाँ इकट्ठा हो गए।
लम्बू ने पेड़ के ऊपर देखा। ''यहाँ कोई नहीं है।''
मिंकू बोला, ''यहाँ कोई नहीं है।''
तोतू ने कहा, ''ध्यान से देखो । खोजो, खोजो ।''
छोटा भालू ने ऐलान किया,
''एक छोटा-सा कमरा मिला है।''

धीमे ने कहा, ''मुझे एक झूला मिला है।''
डरपोक खरगोश ने पूछा,
''यह ब्लॉक किस काम के हैं?''
मिंकू बंदर ने पूछा, ''यह क्या है?''
पुराखा ने समझाया,''शायद यह पेन्सिल है।''

मोटे और लम्बू को एक कमरा दिखा।
उन्होंने सबको बुलाया,
‘‘देखो, यहाँ क्या है?’’
सभी स्कूल बैग लेकर आए थे।
वे सब चिल्लाने लगे, ‘‘टीचर, टीचर!
हमारी टीचर किधर है?’’
किसी को भी पता नहीं था।

तभी उन्हें एक दहाड़ सुनाई दी।
फिर एक और ऊँची गरज।
उसके बाद एक और ज़ोरदार गरज।
पुराखा और मिंकू परेशान हो गये।
धीमे डर गया।
तोतू बोर्ड के पीछे छिप गया।

"यह कौन है ?"

मिंकू बोला, "हप,"

चारों ओर सन्नाटा!

सब टीचर की ओर देख रहे थे।

ऊपर-नीचे, बड़े ही ध्यान से।

फिर उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा।

टीचर ब्लैक बोर्ड की तरफ़ मुड़े।

“कूदो,” मिंकू बोला।

“उड़ जाओ,” तोतू बोला।

धम धम धम, भागा मोटा।

धीमे चीखा, “भागो, ओर तेज़ भागो।”

“भागो,” सभी जानवर चिल्लाए।

जब टीचर फिर घूमे तो कक्षा में कोई भी नहीं था।

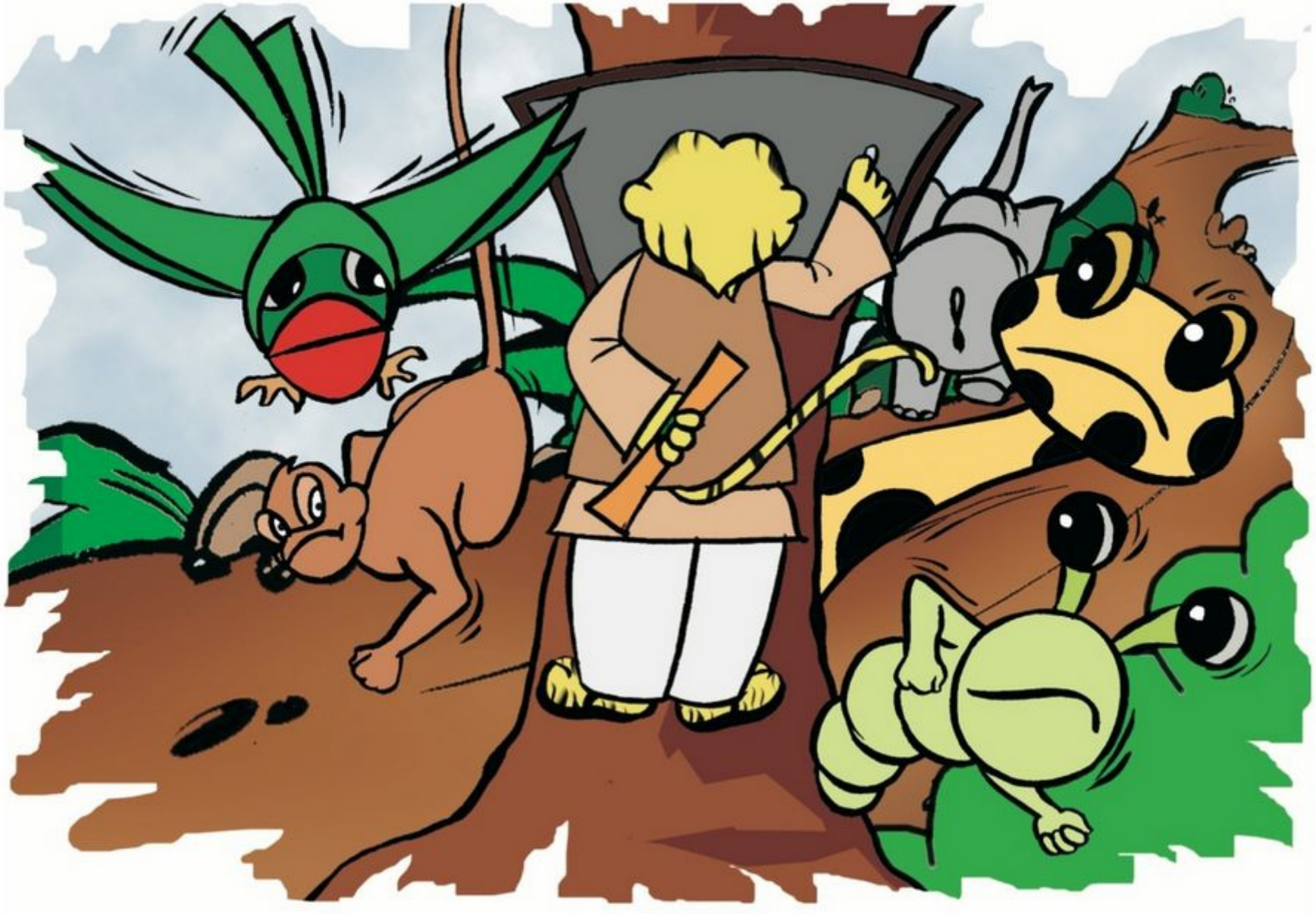

जंगल में स्कूल खुलते ही सभी जानवर बड़े उत्साह से वहाँ जाते हैं।
आगे क्या हुआ जानने के लिए पढ़िये जंगल का स्कूल।

अनेक भारतीय भाषाओं में हमारी रोचक किताबों के बारे में और जानकारी के लिए
www.prathambooks.org पर लॉग ऑन करें।

हमारी किताबें अंग्रेज़ी, हिन्दी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मराठी, गुजराती, बांग्ला,
पंजाबी, उर्दू व ओड़िया में भी उपलब्ध हैं।

PRATHAM BOOKS

प्रथम बुक्स भारतीय भाषाओं में वाजिब दामों व अच्छे स्तर की बाल पुस्तकें

ISBN 81-8263-053-3
9 788182 630536

Age Group: 3-6 years
Jungle Ka School (Hindi)
MRP Rs. 15.00